प्रश्न 20. महाकवि विधापति रचित “ गंगाक बिनती ” शीर्षकमे वर्णत बिनतीक भावार्थ लिखू ।

उतर - “गंगाक बिनती ’’ बिधापतिक भक्तिपरक गीत अछि । विधापति अपन पदमे केवल काम - विलासमे निरत नायक - नायिकाक रूप सौन्दर्य एंव प्रणय केलिक चित्रे धरि अंकित नहि कएलनि अछि , अपितु किछु एहनो गीत लिखलनि अछि जाहिमे तत्कालीन समाजक आस्तिकता , धार्मिक भावना , भक्ति आदिक वर्णन भेटैछ । प्रस्तुत गीत रूम पदमे गंगाक प्रार्थना अछि । गंगाकँ ओ शक्ति रूपमे देखलन्हि ।

कत सुखसार पाओल तुअ तीरे ।

छोड़इत निकट नयन बह नीरे ॥

कर जोड़ि बिनमओ विमल - तरंग़े ।

पुन दरसन होअ पुनमति गङे ॥

हे माँ गंगे अहाँक निकट ऐला पर असीम सुख भेटल मुदा अहाँसँ दूर जेबामे बड़ दु: ख भ रहल अछि । सहजहि

नयन सँ नोर बहए लगैत अछि । अहाँ दुर जेबाक कल्पने सँ संसारक रीति - नीति के त मानहि पड़त । एहि अपराध के क्षमा करब ।

कि करब जप- तप जोग धयाने ।
जनम कृतारथ एकहि सनाने ।।
भनइ विधापति समदओं तोही ।
अंतकाल जनु बिसरह मोही ।।

हे माँ गंगे अहाँक पावन नीर मे नहएलासँ , सभ पाप दूर भ गेल आब जप , तप , जोग ध्यान करबाक कोनो प्रयोजन नहि रहि गेल । हमर जनम कृतार्थ भ गेल ।

कवि कहैत छथि माँ गंगासँ कोस भरि दूरे डेरा द देलन्हि । आ बजला जँ हम एतेक दूर आबि गेलहुँ त माँ गंगा पुत्रक लेल कोस भरि नहि आबि सकैत छथि॥